12·12 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

THE ALARMING SITUATION ARISING OUT OF THE REPORTED HEAVY CONCENTRATION OF FOREIGN NAVAL FORCES IN INDIAN OCEAN

श्री यशवन्त सिंह कुशवाह (भिंड) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से अविलंबनीय लोक-महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर प्रतिरक्षा मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वे इस बारे में एक वक्तव्य देने का कष्ट करें :

> "हिन्द महासागर में विदेशी नौ-सेनाओं के कथित भारी जमाव से उत्पन्न चिन्ताजनक स्थिति ।"

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI L. N. MISHRA) : Mr. Speaker, Sir, Government are concerned at the increasing presence of foreign naval vessels in the Indian Ocean area. Government would like the Indian Ocean area to remain free of tensions and a zone free of nuclear weapons. This view of Government has been indicated on the Floor of this House on earlier occasions. As the House knows, according to international practice, all Powers have the freedom to use the high seas.

श्री यशवन्त सिंह कुशवाह : क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगें कि हिन्द महासागर को नौसैनिक अड्डा अथवा ईंधन स्थल बनाने का प्रयन्त्न किन किन देशों के द्वारा हो रहा है और भारत के किन किन हिन्द महासागरीय द्वीपों को ब्रिटेन, अमरीका या अन्य किसी देश द्वारा क्रय करने अथवा कब्जा करके इस्तेमाल करने का प्रयन्न किया गया है ?

क्या मन्त्री महोदय यह भी बतायेंगे कि भारतीय नौसेना को अधिक शक्तिशाली

बनाने के लिए क्या प्रयत्न किया जा रहा है जिससे कि वैकुअमं न रहे और हिन्द महासागर से सम्बन्धित समस्त राष्ट्र हिन्द महासागर की सुरक्षा के बारे में पूर्ण विश्वास कर सकें ?

श्री ल० ना० मिश्र : जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वैकुअम की बात हम नहीं मानत । किसी के जाने से या विदड़ा करन से वकअम नहीं हो जाता है । जहां तक विदेशों का सवाल है, पिछले डेढ़ साल से रूस, और अमरीका के काफी जहाज इंडियन ओशन में देखे गए हैं । लेकिन हमारे किसी टापू या देश के किसी दूसरे अंश को क्रय करने अथवा उसका व्यवहार करने का कोई प्रश्न नहीं उठता है । न हम किसी को कुछ देने वाले हैं और न ही हम कोई सुविधा देने वाले हैं ।

श्री यशवन्त सिंह कुशवाह : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि हिन्द महासागर को न्युक्लियर अणमुक्त क्षेत्र बनाये जाने का जो भारत का प्रयत्न है उसके बारे में अणुशक्ति संपन्न बड़े बड़े राष्ट्रों की क्या प्रतिक्रिया है ? क्या इस सवाल को संयुक्त राष्ट्र संघ में उठाया गया है और वहां उठाये जाने पर विश्व के अन्य देशों की इस संबंध में क्या प्रतिक्रिया हुई है ?

श्री ल० ना० मिश्र : जहां तक यूनाइटेड नेशन्स का सवाल है, वहां पर यह प्रस्ताव हो चुका है कि इस क्षेत्र को न्यूक्लियर टेन्शन से अलग रखा जाये । जैसा कि माननीय सदस्यों ने अभी देखा होगा, मारशिस के प्राइम मिनिस्टर तथा हमारे प्राइम मिनिस्टर ने एक संयुक्त वक्तव्य में कहा है कि हम नहीं चाहते कि इंडियन ओशन में न्यूक्लियर या किसी तरह का टेन्शन बढ़ाया जाये जिससे शान्ति को खतरा हो ।

SHRI HEM BARUA (Mangaldai) : The Mauritius Prime Minister must be congratulated for attracting our attention to the Indian Oceam. We were told on the floor of the House that,

[Shri Hem Barua]

when the vacuum in the Indian Ocean is created after the withdrawal of the British power, no nation or nations would be allowed to fill the vacuum. Now the Chinese, the Pakistani and the Russian ships, navalcrafts and submarines are operating in the Indian Ocean. With the mounting of tension in West Asia, the strategic importance of the Indian Ocean has grown. In this context, may I know what steps Government have taken to see whether, apart from Mauritius, there are other peace-loving countries also for having a peace pact in the defence of the Indian Ocean? If the Government do not propose this, may I know what steps Government propose to take to see that the Indian Ocean does not become a playground for international conspiracy and intrusion?

SHRI L. N. MISHRA: I have also every respect for the Mauritius Prime Minister and I will also congratulate him. But I might mention here that we have been aware of the situation from before and we have been realising the gravity of the situation ... (*Interruption*)

About nuclear tension, I have already said that we are trying to see that nuclear tension does not increase. As far other countries, I would not like to mention the names; we are talking at diplomatic level with various countries, and I may urge upon the Hon. members to build up public opinion which is very important. We have to build up public opinion and see that these big powers realise what is our feeling.

SHRI PILOO MODY (Godhra): Ask him, Sir, where is the Indian Ocean.

SHRI HEM BARUA : The Minister has not replied to my question. He has said that the nuclear potential in the Indian Ocean has not increased. That means, the nuclear potential is already there and that has not increased. I want to know the steps Government propose to take to see that the Indian Ocean is not converted into a playground of international conspiracy.

SHRI L. N. MISHRA : So far as nuclear potential is concerned. .. (*Interruptions*), about the high seas we can only persuade the big powers who are trying to create nuclear tension in the area not to do so. I do not say whether it is already there or it is not already there (*Interruption*). .. This area should be free from nuclear tension in any case.

SHRI HEM BARUA : I wanted to know what steps have been taken to have the assistance of other peace-loving nations for defence or peace pact.

SHRI L. N. MISHRA ; With like-minded countries, we have taken up the issue both at diplomatic level and at other levels. We are trying to build up public opinion on this.

SHRI PILOO MODY : What ar the other levels?

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, युनाइटेड नेशन्स और सेक्योरटी कौंसिल के प्रस्ताव के बाद भी अमरीका और रूस की नेवी की गतिविधियां इस इंडियन ओशन में बढ़ रही हैं—उनका कोई डिफेन्स इन्ट्रेस्ट भी उसमें नहीं है। तो मैं जानना चाहता हूं क्या आप, जो दूसरे एशियाई देश हैं उनके साथ मिलकर के इन दोनों बड़े देशों को बतायेंगे कि आपको यह बन्द करना चाहिए नहीं तो हम इसको अनफ्रेंडली ऐक्ट ट्रीट करेंगे ?

दूसरे में यह जानना चाहता हूं कि क्या आप उन देशों क साथ मिल करके कोई ऐसी डिफन्स अन्डरस्टैंडिंग करेंगे जिसमें ज्वाइन्ट पैट्रोलिंग वगैरह की व्यवस्था हो]?

अन्त में मैं यह जानना चहता हूं क्या सरकार को मालूम है कि कराची के नजदीक वाडूर में, जो कि पाकिस्तान का आईलैंड है, वहां पर रूस ने अपना एक अड्डा बनाया है और रूस पाकिस्तान की नेवी को भी मदद दे रहा है, तो उसके सम्बन्ध में सरकार क्या कर रही है ?

श्री ल० ना० मिश्र : अध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने पहले भी कहा है और अभी भी कहता हूं हम किसी भी देश के साथ सैनिक समझौते करके इंडियन श्रोशन में टेंशन नहीं करना चाहते और हम चाहते हैं कि न्युक्लियर वैपंस से यह ज़ोन फ्री रहे। हम चाहते हैं कि जैसे इंटरनेशनल प्रैक्टिस है तमाम पावर्स को हाई सीज़ के इस्तेमाल की फ्रीडम होनी चाहिए । हमारे मित्र देश जो अगल बग़ल में है जिनका कि नाम मैं नहीं लेना चाहता उन से हमारी बातचीत हुई है कि वे दबाव डालें बड़े बड़े देशों पर कि वह इस तरह के काम न करें जिससे कि इंडियन श्रोशन में टेंशन बढ़े ।

जहां तक कराची के पास अड्डे को रूस की मदद का सवाल है हम ने यह बात सुनी थी और हम ने पता भी लगवाया था लेकिन उस में कोई सत्य नहीं मालूम होता ।

जहां तक ज्वाएंट पैट्रोलिंग की बात है मैं नहीं चाहता कि ज्वाएंट पैट्रोलिंग हो । हम अपनी ैट्रोलिंग करना चाहते हैं । हम ने अपनी नेवी को बहुत बढ़ाया है लेकिन माननीय सदस्य से मैं यह अवश्य कहना चाहूंगा कि नैवी को एक रात में नहीं बढ़ाया जा सकता है । ेवी एक ऐसी चीज़ है जहां अरबों रुपया चाहिए । उस को तुरन्त नहीं बढ़ाया जा सकता है । उस में समय लगता है । इस बारे में विशेष कर सन् 65 के बाद हम ने ध्यान दिया है और हम नई नई चीजें लाये हैं लेकिन हमें एक शक्तिशाली पावर बनने में कुछ दिन लगेंगे ।

श्री कंवर लाल गुप्त : मंत्री महोदय मुल्कों का नाम भी नहीं लेना चाहते तो फायदा क्या है . . .

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य पूछ चुके और जवाब भी आ गया । श्री रघुवीर सिंह शास्त्री ।

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री (बागपत) : क्या मंत्री महोदय का ध्यान सोवियत रूस के डिफैंस मिनिस्टर मार्शल ग्रेचको द्वारा पिछले 14 मार्च को करांची में दिये हुए उस स्टेटमैंट की ओर गया है जिसमें यह कहा गया था कि पाकिस्तान की शक्तिशाली नौसेना हिन्द महासागर में होना यह एक बड़ी आवश्यक शर्त है उस क्षेत्र में शान्ति की स्थापना के लिए । उसी के साथ साथ यह समाचार आ रहा है कि वह लोग पाकिस्तान से कुछ समुद्र के तटों पर सुविधा लेने के एवज़ में उन्हें नैवी के उपकरण और कुछ उस तरह के अन्य इक्यिुपमेंटस भेज रहे हैं । साथ ही मौरीशस के प्रधान मंत्री और हमारे प्रधान मंत्री नें एक संयुक्त विज्ञप्ति निकाली जिसकी कि चर्चा मंत्री जी ने भी की तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या उन को पता है कि मौरीशस कुछ सुविधाएं हिन्दमहासागर में रूस को दे रहा है और उस के साथ ही साथ क्या उन्हें यह भी पता है कि 20 मई को बेलग्रेड जर्नल जो एक अख़बार निकलता है उसमें **न्यू बलेंस इन दी इंडियन ओशन** की हैडिंग से एक आर्टिकल निकला है जिसमें बतलाया गया है कि रूस के तीन युद्धपोत एक मैत्री भावना प्रदर्शित करने के लिए पोर्टलुईस जो कि मौरीशस की बंदरगाह है वहां पहुंचे थे तो यह सब चीजें किन बातों का संकेत करती हैं ? साथ ही मंत्री महोदय यह भी बताएं कि प्रधान मंत्री ने जुलाई महीने में जब वह ंडोनेशिया गई थीं तो उन के जाने से पहले वहां के विदेश मंत्री डा० आदम मलिक ने एक स्टटमैंट दिया जिसमें उन्होंने यह कहा था भारत के प्रधान मंत्री के साथ हिन्दमहासागर में यूरोपियन, अमेरिकन और रूस आदि की जो उच्च शक्तियां हैं उन की आपस में प्रतिद्वंदिता है और उसके कारण उस क्षेत्र की शान्ति को जो एक ख़तरा पैदा हो गया है उसके सम्बन्ध में हम

[श्री रघुवीर सिंह शास्त्री]

बातचीत करेंगे तो मैं उन से यह भी पूछना चाहता हूं कि क्या प्रधान मंत्री जी ने अपने इंडोनेशिया के दौरे में वहां के राष्ट्रपति से और वहां के प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री से इस सम्बन्ध में कुछ बातें की थीं और उस तरीके से क्या मौरीशस के प्रधान मंत्री से भी उन की इस सम्बन्ध में बातें हुई हैं इन सब तथ्यों पर क्या वह प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

श्री ल० ना० मिश्र : जहां तक प्रधान मंत्री की बात का सवाल है उन्होंने एक बयान इस सदन् के पटल पर रक्खा था जिसको माननीय सदस्य ने देखा होगा । जहां तक मौरीशस के प्रधान मंत्री की बात है हम लोगों ने ज्वाएंट कम्युनिक किया है और दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात की चर्चा की है कि हिन्द महासागर में बड़ी बड़ी शक्तियों को नहीं आना चाहिए और किसी तरीके का तनाव वहां नहीं बढ़ाना चाहिए ।

जहां तक यह सवाल कि रूस को मौरीशस ने क्या सुविधाएं दी हैं मुझे पूरी जानकारी नहीं है कि रूस को मौरिशस ने क्या सुविधा दी है लेकिन मौरीशस के पास रूस के अलावा और भी शक्ति है, ग्रेट ब्रिटेन उन को अगल बगल के टापुओं में कुछ सुविधाऐं हैं इसलिए वह एक चिन्ता की बात है और उस ओर ध्यान देना चाहिए ।

SHRI J. B. KRIPALANI (Guna): Why dose not he say, 'What can we do?'.

SHRI PILOO MODY: Are you trying for any co-operation?

SHRI BAL RAJ MADHOK (South Delhi): He dose not want to name them.

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री : सोवियत रूस के डिफेंस मिनिस्टर का जो 14 मार्च का स्टेटमेंट है जिसमें उन्होंने यह कहा है कि हिन्द महासागर क्षेत्र में शान्ति के लिए यह प्रीकंडिशन है कि पाकिस्तान के पास एक बहुत बड़ी और ताक़तवर नौसेना होनी चाहिए और रूस उन को नैवी का इक्विपमैंट दे रहा है इस एवज में कि रूस को कुछ वह अपने तट पर सुविधा दे रहे हैं ? इस सम्बन्ध में मंत्री महोदय को क्या कहना है ?

श्री ल० ना० मिश्र : हम ने इस सदन में पहले भी कहा है कि रूस जिस तरीके से पाकिस्तान को हथियार या अन्य फौजी साजसामान देता है या प्रोत्सहान देता है उस का हम समर्थन नहीं करते । हम ने अपना ऐतराज बताया है और कहा है कि जितना भी वह पाकिस्तान की मदद करने की कोशिश करेंगे उससे शान्ति ख़तरे में होगी और हम लोगों के लिए एक ऐसी परिस्थिति आ जायेगी जो कि दुनिया की शान्ति के लिए ठीक नहीं होगी ।

12·24 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

REPORT OF UNECONOMIC BRANCH LINES COMMITTEE

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI R. L. CHATURVEDI): On behalf of Shri Govinda Menon I beg to lay on the Table a copy of the Report of the Uneconomic Branch Lines Committee, 1969. [*Placed in Library. See* No. L.T.—2425/69]

SHRI PILOO MODY (Godhra): Before you proceed further, I want to remind you that I sent a calling attention notice to you this morning on the firing in Porbandar.

MR. SPEAKER: I cannot say anything about the calling attention which came to me this morning.

SHRI PILOO MODY: Will you permit it, Sir? The Central Government is using its police force all the way in the West Coast. I think some discussion in the House may be permitted by you.